International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 65-67

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2020; 6(10): 65-67
www.allresearchjournal.com
Received: 03-08-2020
Accepted: 05-09-2020

**संदीप कुमार गुप्ता**
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
महेंद्र महिला कॉलेज (गोपालगंज)
(जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा),
बिहार, भारत

**Corresponding Author:**
**संदीप कुमार गुप्ता**
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)
महेंद्र महिला कॉलेज (गोपालगंज)
(जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा),
बिहार, भारत

# गलवान संघर्ष के बाद भारत चीन के बदलते रिश्ते

## संदीप कुमार गुप्ता

जब पूरी दुनिया कोरोना जैसे वैश्विक महामारी से जूझ रही है। ऐसी परिस्थिति में पूर्वी लद्दाख के गलवान घाटी में वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) के पास विश्व व्यवस्था के दो बड़े राष्ट्र भारत व चीन सीमा विवाद के कारण आपस में उलझे हुए हैं। इस विवाद का केंद्र अक्साई चिन में स्थित गालवन घाटी (Galwan Valley) है, जिसको लेकर दोनो देशों की सेनाएँ आमने.सामने आ गईं हैं। जून 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में एलएसी पर हुई इस झड़प में भारतीय सेना के एक कर्नल समेत 20 सैनिकों की मौत हुई थी । जहाँ भारत का आरोप है कि गालवन घाटी के किनारे चीनी सेना अवैध रूप से टेंट लगाकर सैनिकों की संख्या में वृद्धि कर रही है, तो वहीं दूसरी ओर चीन का आरोप है कि भारत गालवन घाटी के पास रक्षा संबंधी अवैध निर्माण कर रहा है।

**भारत.चीन संबंधों की पृष्ठभूमि :-**

भारत और चीन के संबंधों में खटास का एक लंबा इतिहास रहा है। स्वतंत्रता के बाद यह आशा की जा रही थी कि प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों और साम्राज्यवाद के विरुद्ध दोनों देशों के समान हितों को दृष्टिगत रखते हुए भारत और चीन के संबंध घनिष्ठ होंगे तथा दोनों देश आपसी सहयोग करते हुए आगे बढ़ेंगे।

भारत 1947 मैं स्वतंत्र हुआ तथा 1949 में चीन में साम्यवादी सरकार की स्थापना हुई। साम्यवादी शासन की स्थापना के बाद यह महसूस किया गया कि भारत के चीन के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों की स्थापना का मार्ग अनेक कठिनाइयों से भरा हुआ है। भारत प्रथम देश था जिसने साम्यवादी चीन सरकार को सर्वप्रथम मान्यता प्रदान की थी। चीन के प्रति भारत का दृष्टिकोण प्रारंभ से ही मित्रता पूर्ण रहा है। सन 1954- 57 के दौरान यह प्रतीत हो रहा था कि शायद भारत और चीन के संबंध में सुधार होगा। उस समय स्वतंत्र भारत में हिंदी चीनी भाई.भाई का नारा बहुत लोकप्रिय रहा था। किंतु यह अधिक समय तक नहीं चल पाया और चीन ने भारत के साथ विश्वासघात किया, पंचशील समझौते का उल्लंघन किया और 1962 में भारत पर अचानक आक्रमण कर दिया। यह आक्रमण चीन की साम्राज्यवादी नीति का परिणाम था। इसके परिणाम स्वरूप भारत और चीन के मधुर संबंध बिगड़ गए और इनमें भारी कटुता आ गई जो वर्तमान समय में भी जारी है। 1978 तक भारत चीन संबंध में टकराव और तनाव चलता रहा। इस काल में चीन यह प्रयास कर रहा था कि भारत के पड़ोसी देशों को अपनी ओर मिला ले इसलिए वह पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, म्यांमार को अनेक सहायता प्रदान कर रहा था।

1977-78 के समय दोनों देशों मे सत्ता परिवर्तन हुआ भारत में जनता सरकार सत्तारूढ़ हुई तथा चीन में माओं के बाद नई सरकार द्वारा सत्ता संभाली गई। दोनों देश विगत बातों को भूल कर नए सिरे से मधुर संबंध स्थापित करने की दिशा में प्रयास किए। 1988 में, भारतीय प्रधान मंत्री राजीव गांधी ने द्विपक्षीय संबंधों के सामान्यीकरण की प्रक्रिया शुरू करते हुए, चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने "लुक फॉरवर्ड' के लिए सहमति व्यक्त की और सीमा के प्रश्न के पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान की मांग करते हुए अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से द्विपक्षीय संबंधों को विकसित किया। 1992 में, भारतीय राष्ट्रपति आर. वेंकटरमन ने चीन का दौरा किया। वह पहले राष्ट्रपति थे जिन्होंने भारत गणराज्य की स्वतंत्रता के बाद से चीन का दौरा किया। इसके बाद चीनी प्रधानमंत्री जनवरी 2002 में 140 सदस्यीय शिष्टमंडल के साथ भारत आए। चीनी प्रधानमंत्री ने कहा कि चीन पाकिस्तान का निकट सहयोगी एवं मित्र है फिर भी आतंकवाद के विरुद्ध संघर्ष में वह पूरी तरह भारत का साथ देगा। 2003 में, भारतीय प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन का दौरा किया। दोनों पक्षों ने चीन.भारत संबंधों में सिद्धांतों और व्यापक सहयोग पर सहमति जताई और भारत

चीन सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधि बैठक तंत्र स्थापित करने पर सहमत हुए। मई 2004 में प्रकाशित ‰वर्ल्ड अफेयर्स ईयर बुक" में चीन ने पहली बार सिक्किम को भारत के अंग के रूप में प्रदर्शित किया।

वर्ष 2015 में भारतीय प्रधानमंत्री ने चीन का दौरा किया इसके बाद चीन ने भारतीय आधिकारिक तीर्थयात्रियों के लिये नाथू ला दर्रा खोलने का फैसला किया। उसके बाद वर्ष 2018 में चीन के राष्ट्रपति तथा भारतीय प्रधानमंत्री के बीच वुहान में 'भारत.चीन अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' का आयोजन किया गया। उनके बीच गहन विचार.विमर्श हुआ और वैश्विक और द्विपक्षीय रणनीतिक मुद्दों के साथ.साथ घरेलू एवं विदेशी नीतियों के लिये उनके संबंधित दृष्टिकोणों पर व्यापक सहमति बनी। वर्ष 2019 में प्रधानमंत्री तथा चीन के राष्ट्रपति बीच चेन्नई में 'दूसरा अनौपचारिक शिखर सम्मेलन' आयोजित किया गया। इस बैठक में, 'प्रथम अनौपचारिक सम्मेलन' में बनी आम सहमति को और अधिक दृढ़ किया गया। तब दोनों देशों के बीच मधुर लगे रहे रिश्ते अब कड़वाहट और टकराव से भर गए हैं। चीन और भारत के बीच सीमा विवाद और प्रतियोगी भावना हमेशा रही है लेकिन बढ़ती आर्थिक निर्भरताओं के कारण ये भावना दबती नज़र आ रही थी।

पिछले कुछ वर्षों में भारत तथा चीन के मध्य सीमा को लेकर कई विवाद सामने आए हैं। 2017 में डोकलाम विवाद सामने आया था। डोकलाम भारत.भूटान और चीन सीमा के मिला बिंदु को लेकर है। डोकलाम का कुछ हिस्सा सिक्किम में भारतीय सीमा से सटी हुई है। जहां चीन सड़क निर्माण करना चाहता है। भूटान और चीन दोनों इस इलाके पर अपना दावा करते हैं। भूटान और चीन में कोई राजनयिक संबंध नहीं है, इसलीए भूटान को ऐसे मामलों में भारत की ओर से सैन्य और राजनयिक सहयोग मिलता है। भारत इस सड़क का विरोध इसलीए भी करता है क्योंकि, अगर चीन ने यह सड़क बना ली तो देश के उत्तर पूर्वी राज्यों को देश से जोड़ने वाली 20 किलोमीटर चौड़े इलाके पर चीन की बढ़त हो जाएगी। भारतीय सेना की भाषा में इस इलाके को चिकन नेक कहा जाता है।

2019 में भी भारतीय और चीनी सैनिकों के बीच पैंगोंग त्सो झील (Pangong Tso Lake) के समीप लद्दाख में तनाव की स्थिति देखने को मिली। लेकिन गलवान घाटी में हुई झड़प ने दोनों देशों के बीच फिर से वही कड़वाहट पैदा कर दी है। झड़प में 20 भारतीय सैनिक मारे गए हैं और चीन और भारत एक.दूसरे पर हमला करने के आरोप लगा रहे हैं।

## भारत-चीन विवाद के तत्कालिक कारण

भारत तथा चीन के संबंध में उतार चढ़ाव बनी रहती है। परंतु गलवान घाटी में हुए हिंसक झड़प ने दोनों देश के संबंधों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है पिछले कुछ वर्षों में देखा जाए तो देमचोक, डोकलाम इत्यादि कई इलाकों में दोनों देशों के मध्य टकराव हुए लेकिन उनका शांतिपूर्ण समाधान निकाल लिया गया किंतु गलवान घाटी में यह विवाद हिंसक स्तर पर पहुंच गया। ऐसे में यह प्रश्न उठता है कि विभिन्न तरह के समझौते के माध्यम से जब दोनों देश सीमा विवाद को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने पर राजी हो चुके थे तो चीन ने एलएसी पर इस बार इतना आक्रामक रुख क्यों अख्तियार कर लिया?

चीन के इस कदम के पीछे कई वजहें हैं जो भारत चीन के संबंध में आए तनाव के तत्कालिक कारणों को बयां करती है।

भारत दारबुक.श्योक-दौलत बेग ओल्डी' (Darbuk-Shyok-Daulat Beg Oldie- DSDBO) सड़क का निर्माण कर रहा है जिसका विरोध चीन के द्वारा किया जाता रहा है।

भारत ने चीन की विदेश नीति के महत्वकांक्षी प्रोजेक्ट BRI (बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव‡ का हिस्सा बनने से इनकार कर दिया। BRI चीन द्वारा प्रस्तावित एक महत्त्वाकांक्षी आधारभूत ढाँचा विकास एवं संपर्क परियोजना है जिसका लक्ष्य चीन को सड़क, रेल एवं जलमार्गों के माध्यम से यूरोप, अफ्रीका और एशिया से जोड़ना है। I इसके अलावा पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (POK) से गुजरने वाला चीन पाकिस्तान इकोनामिक कॉरिडोर(CPEC) इसी BRI प्रोजेक्ट का हिस्सा है जिसका भारत विरोध कर रहा है क्योंकि यह भारत की संप्रभुता के विरुद्ध है।

भारत ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP) पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया था, क्योंकि यह समझौता चीन के हितों के अनुकूल था। RCEP एक व्यापक क्षेत्रीय आर्थिक समझौता है। इस समझौते की औपचारिक शुरुआत वर्ष 2012 से की गई, जिसका उद्देश्य आसियान और इसके मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के भागीदार सदस्यों के बीच व्यापार नियमों को उदार एवं सरल बनाना है।

दक्षिण चीन सागर में भारत अंतरराष्ट्रीय कानूनों के आधार पर, नेविगेशन और ओवरफ्लाइट की स्वतंत्रता, और निर्बाध वाणिज्य के लिए भारत समर्थन करता है। वही चीन दक्षिणी चीन सागर में अपना वर्चस्व स्थापित करना चाहता है। इसके अलावा ए स्ट्रिंग आफ पर्ल्स, क्वाड समूह तथा भारत अमेरिका संबंध में आई करीबी चीन के लिए चिंता का विषय रहा है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि ऐसे कई मुद्दे को लेकर दोनों देशों के बीच संबंध खराब होते रहे तथा गलवान घाटी जैसी हिंसक घटना सामने आती है।

## आगे का रास्ता

चीन के प्रति भारत की नीति हमेशा से सॉफ्ट रही है। पिछले कुछ वर्षों से चीन जिस प्रकार से आक्रामक नीति अपना रहा है तथा गलवान घाटी के इस हिंसक झड़प के बाद भारत को अपनी नीति में परिवर्तन करने की आवश्यकता है, ताकि चीन को उसके रवैया के विरुद्ध एक मजबूत संदेश दिया जा सके।

भारत हाल ही में यू.एन.ओ. के सुरक्षा परिषद का अस्थाई सदस्य चुना गया है जिसका लाभ उठाते हुए भारत को तिब्बत, हॉन्ग कोंग, ताइवान तथा शिंजियांग के मुद्दे को तूल देना चाहिए जब तक कि चीन भारत की आंतरिक मामलों पर हस्तक्षेप करना बंद ना कर दे।

भारत को क्वाड समूह के आपसी सहयोग की मदद से दक्षिणी चीन सागर के मुद्दे पर चीन को घेरने की जरूरत है। चीन डेट नीति के तहत विभिन्न एशियाई तथा अफ्रीकी देशों को अपने चंगुल में फंसाता रहा है। भारत को चीन की इस नीति को उजागर करते हुए दक्षिणी एशियाई देशों के साथ आपसी सहयोग बढ़ाकर रणनीतिक बढ़त हासिल करनी चाहिए।

भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है तथा 2025 तक 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर है भारत का आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरना चीन को खटकता है। इसके अलावा चीन से भारत का आयात वित्तीय वर्ष 2018-19 में 70.32 बिलियन डॉलर था, जबकि भारत का चीन को निर्यात वित्तीय वर्ष 2018-19 में 16.75 बिलियन डॉलर था। इस प्रकार, वित्तीय वर्ष 2018-19 में चीन के साथ भारत का व्यापार घाटा 53.57 बिलियन डॉलर था। अतः हम भारत को न केवल चीन बल्कि विश्व बाजार में भी अपनी भागीदारी बढ़ानी होगी तथा चीन पर निर्भरता को कम किया जा सके।

कोरोना वायरस के कारण एवं भारत तथा अन्य देशों के साथ बेवजह सीमा विवाद को तूल देकर चीन अपनी विश्वसनीयता

खोता जा रहा है, यही समय है जब भारत इसे एक अवसर के रूप में देखते हुए विश्व में अपनी उपयोगिता साबित कर 21वीं सदी को भारत की सदी के रूप में साबित कर सकता है।

## संदर्भ सूची


1. डॉ. बी. एल. फाड़ियां, अंतरराष्ट्रीय राजनीति, साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
2. डॉ. एस. सी. सिंगल, भारत की विदेश नीति, लक्ष्मीनारायण पब्लिकेशन
3. जे. एन. दिक्षित, भारत की विदेश नीति और आतंकवाद, ज्ञान पब्लिकेशन हाउस नई दिल्ली।
4. दौलत सिंह जोरावर, द हिमालयन स्टेलमेंट रीटृसींग द इंडिया चाइना डिस्प्यूट, सेक्टर 4 लैंड वेलफेयर स्ट्रेटजी के. डब्ल्यू. प्रकाशन नई दिल्ली।
5. आर.एस. यादव, भारत की विदेश नीति, किताब महल प्रकाशन।
6. https://www.drishtiias.com/daily-updates/daily-news-editorials/galwan-valley-clash